विनय पाठ दोहावली

(पूजा प्रारम्भ करने के समय ९ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर विनय पाठ बोलें)

इह विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज ॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरण, भवदधि शोषण हार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार ॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण राश ॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँजग भूप ॥५॥
मै वन्दौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछू उपाव ॥६॥
भविजन को भवकूपतैं, तमहीं काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार ॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजनको शिवगैल ॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप।
अनुक्रम तैं शिवपद लहैं, नेम सकलहनि पाप ॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयो, अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजै सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में खेय लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकै, कीजै आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कह हूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातें करौ पुकार॥२०॥
बन्दौं पांचो परमगुरु, सुर गुरु बन्दत जास।
विघन हरण मंगल करण, पूरण परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

पुष्पांजलि क्षिपेत